मनसा सेवा - 10

➢➢ वैराग्य

➳ _ ➳ जब तक खुद वैरागी नहीं बने , दूसरो को वैरागी नहीं बना सकते

➳ _ ➳ चाहे वस्तु / व्यक्ति / स्थान से

→ सिर्फ तभी आता है जब तक हमें उसके नुकसान का आभास न हो जाये

→ अन्यथा हम उसे छोड़ते नहीं

➢➢ आत्मा का अनुभव

➳ _ ➳ जब तक खुद अनुभवी नहीं बने , दूसरो को अनुभवी नहीं बना सकते

➳ _ ➳ क्या आत्मा का अनुभव इतना गहराई से किया है की आपको पता ही न चले की

→ कौन आया / गया ?

→ fan चालू या बंद ?

→ हाथ कहाँ है ?

➳ _ ➳ आत्मा का इतना गहरा अनुभव करने के बाद

→ व्यक्ति / जगत वो नहीं रहते जो पहले थे

→ हर परिस्थिति / विघन बहुत छोटे लगने लगते हैं ... खेल लगने लगते हैं

→ संसार में आनंद अनुभव नहीं होता

→ वैराग्य Natural हो जाता है... Artificial नहीं